संयुक्त पाठ्यक्रम

(महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय और कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालय के लिए)

बी०ए० : चतुर्थ सेमेस्टर

जनवरी २०१४

हिन्दी (अनिवार्य)

समय : ३ घण्टे

कुल अंक : १००
लिखित परीक्षा : ८० अंक
आंतरिक मूल्यांकन : २० अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम

- कथा क्रम सं० डॉ० रोहिणी अग्रवाल,
  प्रकाशक : खाटू श्याम प्रकाशन, १२७६/५, पीर जी मोहल्ला, प्रताप टाकीज़, रोहतक।
  मोबाइल न० 09991708080
- हिंदी साहित्य का आधुनिक काल : गद्य
- पारिभाषिक शब्दावली
- वस्तुनिष्ठ प्रश्न

खण्ड--क : कथाक्रम

निर्धारित आलोचनात्मक प्रश्न

पाठ्यक्रम में निर्धारित कहानीकारों के साहित्यिक परिचय, निर्धारित कहानियों के वस्तु पक्ष तथा कला पक्ष पर ही प्रश्न पूछे जाएंगे ।

खण्ड--ख : हिंदी साहित्य का आधुनिक काल : गद्य

पाठ्यक्रम में निर्धारित आलोचनात्मक प्रश्न

१ आधुनिक काल की परिस्थितियाँ
२ हिंदी उपन्यास : उद्‌भव और विकास
३ हिंदी कहानी : उद्‌भव और विकास
४ हिंदी नाटक : उद्‌भव और विकास
५ हिंदी निबन्ध : उद्‌भव और विकास

खण्ड--ग : पारिभाषिक शब्दावली

निर्धारित विषय

१ पारिभाषिक शब्दावली : स्वरूप और महत्व
२ पारिभाषिक शब्दावली के गुण
३ पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में सक्रिय विविध सम्प्रदाय : राष्ट्रीयतावादी, अन्तरराष्ट्रीयतावादी, समन्वयवादी ।

Index

Q.N.		P.No.
1	ईदगाह कहानी का उद्देश्य	1 से 4
2	मुंशी प्रेमचन्द का जीवन परिचय	5 से 7
3	मलबे का मालिक कहानी का सार	8 से 10
4	फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्यिक परिचय	11 से 13
5	फैसला कहानी का सार	14 से 15
6	पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में योगदान	16 से 17
6	हिन्दी कहानी के उद्भव एवं विकास का संक्षिप्त परिचय	18 / 20
7	हिन्दी गद्य का विकास स्पष्ट कीजिए	21 से 24
8	नई कहानी के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उसके विकास पर प्रकाश डालिए	25 से 27
9	हिन्दी एकांकी के विकास क्रम का संक्षिप्त परिचय दीजिए	28 से 30
10	फणीश्वर नाथ रेणु का जीवन परिचय	31 से 32
11	ओम प्रकाश वाल्मिकी का जीवन परिचय	33 से 35
12	हिन्दी नाटक के उद्भव व विकास का परिचय	36 से 38 तक
13	महावीर प्रसाद द्विवेदी का युग	39 से 40
14	प्रेमचंद युगीन साहित्य	41 से 43
15	आधुनिक काल की परिस्थितियां	44 से 46
16	पारिभाषिक शब्दावली	47 से 51/53

Q1. 'ईदगाह' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ?

Ans.

'ईदगाह' कहानी प्रेमचंद द्वारा रचित कहानी है इस कहानी मे एक लडका हामिद है वह बहुत ही गरीब है और वह अपनी बुढी दादी अमीना के साथ एक छोटे से घर मे रहता है तीस रोजो के बाद ईद आई है सभी बच्चे, बडे, बुढे बहुत ही प्रसन्न है और वे सभी ईदगाह जाने के लिए तैयार है हामिद भी उनमे शामिल था सभी ईदगाह पहुँच जाते है और अपनी मन पसंद की चीजे खरीदनी शुरू कर देते है कोई खिलौने खरीदता है और कोई मिठाईयाँ खरीदता है लेकिन हामिद इन सभी चीजो से अलग रहता है और तीन पैसो मे अपनी बुढी दादी के लिए एक लोहे का चिमटा खरीदता है। इस कहानी का उद्देश्य एक नही बल्कि कई है जो इस प्रकार है —

(i) <u>जिम्मेदारी से पहले एक बच्चे को परिपक्व बनाना</u> :— हामिद एक छोटा बच्चा है छोटे बच्चो का मन बहुत चंचल होता है उन्हे अपने ऊपर कोई जिम्मेदारी नजर नही आती है वे केवल अपने खेलने की, और खाने मे ही खुश रहते है लेकिन हामिद ऐसा नही है वह बहुत ही समझदार है जब वह अपनी दादी के लिए मेले मे से एक लोहे का चिमटा खरीदकर लाता है तो यह देखकर हम उसकी जिम्मेदारी का अंदाजा लगा सकते है वह छोटा है लेकिन उसे अपनी जिम्मेदारी का अहसास है

वह दोपहर तक खाने के लिए कुछ न खरीदकर लेने के बजाय चीमटा लेता है क्योंकि उसने देखा है की जब उसकी बूढ़ी दादी रोटी सेकती है तो उसकी उंगलियाँ जल जाती है इसलिए वह चीमटा लाता है।

(2). वस्तुओ की खरीददारी उनकी उपयोगिता के आधार पर :- यह हमे सदा ध्यान मे रखना चाहिए की हमे केवल जरूरी चीजे ही खरीदनी चाहिए व्यर्थ की चीजो पर पैसा खर्च नही करना चाहिए। हामिद खिलौने न खरीदकर जरूरी सामान चीमटा खरीदता है तो उससे हमे सीख लेनी चाहिए की हमे केवल उपयोगी चीजो पर ही पैसा खर्च करना चाहिए।

(3). सम्प्रदायिक सदभाव :- ईद पर सभी बहुत प्रसन्न है सभी को ईद की काफी समय से इंतजार था। रमजान का महीना खत्म होने पर ईद आई। सभी लोग आपस मे गले-मिलकर एक दुसरे को ईद की बधाईयाँ देते है और एक साथ ईदगाह मे नमाज पढते है कोई भी इस समय ऊँच-नीच का भेदभाव नही करता है और सभी खुशी से अपना त्योहार ~~मन~~ मना रहे है सभी जगह उत्साह का माहौल है और बहुत ही सुंदर है।

(4). बाल मनोरंजन :- बच्चो का मन बहुत चंचल होता है

उनके लिए तो खिलौने, मिठाईयाँ ही सब-कुछ है वे अन्य किसी के बारे में नही सोचते है उनका अपना ही अलग मन होता है और खिलौनो के साथ खेलकर ही वे अपना मनोरंजन करते है लेकिन ~~आमि~~ हामिद खिलौनो से दूर रहकर अपनी दादी के ~~बच्च~~ बारे मे सोचकर खिलौना न खरीद कर चिमटा खरीदता है यह एक चीज है की हामिद बच्चा होकर भी बड़ा बन गया था।

(5) समाज की समकालीन परिस्थितियाँ :- उस समय ईद का दिन था। और लोग काफी खुश नजर आ रहे थे। खेतो मे अजीब सी रौनक थी। सूर्य भी ऐसा प्रतीत हो रहा था की जैसे वह लोगो को बधाईया दे रहा हो। सभी लोग नए-नए कपड़े पहनकर आपसी भेदभाव को भुलकर ईदगाह जा रहे थे। और आपस मे मिलकर एक दुसरे को बधाईयाँ दे रहे थे। समाज मे उत्साह और उमंग का वातावरण था।

(6) बाल मनोवैज्ञानिकता :- बच्चे का मन बहुत ही चंचल होता है वे केवल अपने खेलने और खाने-पीने की चीजो मे ही अपना मन लगाते है। लेकिन हामिद एक ऐसा बच्चा है जो ~~इस~~ अपने बारे मे नही सोचता है अपनी दादी के बारे मे सोचता है की तवे पर रोटी सेकते हुए अपनी उगलियाँ जल जाती है। इसलिए वह मेले मे

अपने लिए न तो कोई खिलौना खरीदता है और न ही भूख लगने पर कुछ खाता - पीता है केवल अपनी दादी के लिए एक लोहे का चिमटा लाता है

(7) कर्तव्य बोध व उत्साह :- हामिद एक बच्चा है लेकिन उसे अपने कर्तव्य का पूरा ध्यान है उसकी बूढ़ी दादी उसे बहुत प्यार करती है और उसका ख्याल रखती है लेकिन हामिद भी अपनी दादी से बहुत प्यार करता है और इस लिए उसे मेले से चिमटा लाना उसके कर्तव्य बोध का पता बताता है और यह उत्साह की कहानी भी है लोग आपसी क्लेश व भेदभाव को पीछे छोड़कर ईद पर दूसरो को गले लगकर बधाईया देते है और उत्साह से अपना त्योहार मनाते है !!

निष्कर्ष :- अंत मे हम यह कह सकते है की हर बच्चे को हामिद जैसा होना चाहिए। क्योंकि वह बच्चा होकर भी बड़ा बन गया और उसकी दादी अमीना उसके लिए सेवईयाँ न बनाकर बड़ी होकर भी छोटी बन गई। अत! 'ईदगाह' इसी भाईचारे, कर्तव्य बोध, उत्साह व उमंग की कहानी है !!

प्रेमचंद

जीवन परिचय :- प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई सन 1880 ई० में वाराणसी जिले के लमही नामक ग्राम में हुआ था। उनका वास्तविक नाम धनपत राय था। इनके पिता जी का नाम अजायब राय था। इन्होंने अध्ययन के पश्चात् शिक्षा विभाग में अध्यापक तथा स्कूल इंस्पेक्टर के रूप में कार्य किया था। इन्होंने B.A तक शिक्षा प्राप्त की। इनकी माता का नाम शिवरानी था। आरंभ में वे नवाबराय के नाम से उर्दू में लिखते थे। युग के प्रभाव ने उनको हिंदी की ओर आकृष्ट किया। उन्होंने हँस नामक पत्रिका का संपादन किया। जीवन में निरंतर विकट परिस्थितियों का सामना करने के कारण प्रेमचंद जी का शरीर जर्जर हो रहा था। देशभक्ति के पथ पर चलने के कारण उनके ऊपर सरकार का आतंक भी छाया रहता था। प्रेमचंद जी एक साहसी सैनिक के समान अपने पथ पर बढ़ते रहे। उन्होंने वही लिखा जो उनकी आत्मा ने कहा। निरंतर साहित्य साधना करते हुए 8 अक्टूबर, 1936 को उनका स्वर्गवास हो गया।

रचनाएँ :- वरदान, सेवा सदन, प्रेमाश्रय, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, प्रतिज्ञा, गबन, कर्मभूमि, गोदान मंगल सूत्र, मानसरोवर, कर्बला, संग्राम, हँस आदि उनकी प्रमुख रचनाएं थी हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ :—

प्रेमचंद जी हिंदी साहित्य के प्रमुख कलाकार है जिन्होंने साहित्य का नाता जन - जीवन से जोड़ा । इनकी कहानियों की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं

① **सुधारवादी** :— प्रेमचंद की अधिकांश कहानियों में सुधारवादी दृष्टिकोण दिखाई देता है उन्होंने समाज में व्याप्त विसंगतियों का यथार्थ चित्रण करते हुए पाठक को उन विसंगतियों से बचने के लिए कहा है । जिनसे समाज दूषित हो रहा है ।

② **युग निर्माता** :— प्रेमचंद एक युग निर्माता कहानीकार थे । उन्होंने जीवन के सामाजिक , राजनीतिक , पारिवारिक , आर्थिक , धार्मिक आदि विभिन्न पक्षों एवं स्थितियों पर अपनी कहानियाँ आधारित की थी । इनमें समाज के निम्न वर्ग के लोगों का यथार्थ एक मार्मिक चित्रण हुआ है

③ **गांधी वादी विचारधारा** :— प्रेमचंद ने गाँधी जी के आंदोलन से प्रभावित होकर अपनी नौकरी से त्याग - पत्र दे दिया था । इस कारण इनकी कहानियों पर गाँधी जी की विचारधारा का भी स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है उन्होंने अपनी कहानियों में मानव मनोभावों का मनोवैज्ञानिक धरातल पर विश्लेषण किया है इनकी कहानियों के पात्र आम आदमी का प्रतिनिधित्व करने के कारण अत्यंत सजीव तथा हमारे अपने ही प्रतिरूप प्रतीत होते हैं ।

(4) यथार्थोन्मुख आदर्शवाद :- प्रेमचंद की अधिकांश कहानियों में सुधारवादी एवं आदर्शवादी दृष्टिकोण दिखाई देता है। उन्होंने समाज में व्याप्त विसंगतियों का यथार्थ चित्रण किया है और उन्होंने विसंगतियों से बचने के लिए कहा है। जिससे समाज दूषित हो रहा है। प्रेमचंद की कहानियाँ एक वर्ग की न होकर समस्त मानव जगत की कहानियाँ हैं।

(5) भाषा शैली :- प्रेमचंद की कहानियों की भाषा-शैली अत्यंत सहज, सरल, स्वाभाविक तथा भावाभिव्यक्ति में सक्षम है। इन्होंने अपनी भाषा में हिंदी के तत्सम प्रधान शब्दों के अतिरिक्त उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं के लोक प्रचलित शब्दों का भरपूर प्रयोग किया है। मुहावरों के प्रयोग से इनकी भाषा में सजीवता एवं प्रवाहमयता आ गई है। कुछ कहानियाँ इन्होंने आत्मकथात्मक शैली में भी लिखी हैं - जैसे बड़े भाई साहब, नशा।

निष्कर्ष :- अतः प्रेमचंद जी एक महान कहानीकार थे। और उन्होंने हमें बहुत ही मूल्यवान कहानियाँ प्रदान की जो हम आज भी पढ़ रहे हैं और पढ़ते ही रहेंगे।

Q3. "मलबे का मालिक" कहानी का उद्देश्य अपने शब्दों में लिखिए ?

Ans.

भूमिका :- मलबे का मालिक कहानी एक उद्देश्यपूर्ण कहानी है इसमें एक आदमी गनी मियाँ है जो विभाजन के पश्चात पूरे साढे सात साल के बाद अमृतसर हॉकी का मैच देखने के लिए आया है वह पहले अमृतसर के बाँसा बाजार में रहता था। उसका बेटा चिरागदीन जो उसके साथ ही रहता था। लेकिन गनी मियाँ विभाजन से पहले ही पाकिस्तान चला गया था मगर उसका बेटा चिरागदीन उसके साथ नही गया था। अब गनी मियाँ अपने बेटे से मिलने के लिए उसके घर जाता है लेकिन वहाँ उसे केवल एक मलबे के ढेर के अतिरिक्त और कुछ नही मिलता है वह बहुत उदास होता है और उसकी आँखे चारों ओर अजनबीयो की तरह देख रही थी। उसके बेटे और उसके परिवार को रक्खा पहलवान ने उसका घर छिनने के लिए मार डाला था। लेकिन मुहल्ले का कोई भी व्यक्ति उसे यह सब नही बताते है क्योंकि रक्खा पहलवान एक गुंडा था। उससे सभी डरते थे।

①. हिंदु और मुसलमानो की मानसिकता :- जब भारत का विभाजन हुआ तो हिंदु और मुसलमान एक दूसरे के खून के प्यासे हो गए। वे एक दूसरे को समझने के स्थान ~~से~~ पर एक दूसरे को मारना चाहते थे। अतः हिंदु और मुसलमान जो कभी भाई-

Date :

भाई कहलाते थे। वे इस विभाजन के कारण अलग हो गए। और यह विभाजन एक विष का बीज बो गया। जो आज भी उगा हुआ है और बढ़ता ही जा रहा है।

(2) नरसंहार :- भारत-विभाजन के दौरान जन और धन दोनों की काफी हानी हुई। लोगों ने एक दुसरे को सब्जी की तरह काट डाला तथा लोग एक दुसरे को मारना और मुसलमानों को भारत से भगाना ही अपना उद्देश्य मान रहे थे। अतः भारत का विभाजन बहुत ही बुरा विभाजन था।

(3) विनाशशीलता :- भारत-विभाजन के दौरान विनाश और मार काट के सिवाय और कुछ नही हुआ। लोगों ने एक दुसरे के घरों को जला दिया। उनकी संपत्ति को छीन लिया तथा परिवारों को उजाड़ दिया। भारत विभाजन को 'गदर' के नाम से भी जाना जाता है अतः इस विभाजन ने लोगों को विनाश के अलावा और कुछ नही दिया। गनी का अपना परिवार तो पहले ही छूट चुका था लेकिन अब वह परिवार ही नही रहा।

(4) मानवता का अंत :- भारत विभाजन के दौरान जो हानी हुई लोगों के मकान जल गए। वे मकान तो और भी बस सकते हैं लेकिन जो मानवता का अंत है उसकी भरपाई कभी

Date :

नहीं हो सकती है मनुष्य मे मनुष्यता नहीं रही। और लोग एक दूसरे को घृणा की दृष्टि से देखते रहे। यह खाई आज भी बने हुए है।

5. साम्प्रदायिक भावना का प्रदर्शन :- समाज एक बहुत अच्छा तथा बड़ा भाग है मनुष्य समाज मे रहता है उसे अपने अधिकार मिले हुए है लेकिन फिर भी मनुष्य की भूख कम नहीं हुई है साम्प्रदायिकता की भावना आज भी समाज मे पाई जाती है।

6. <u>विश्वासघात</u> :- गनी मियाँ रम्खा पहलवान पर बहुत विश्वास करता था। लेकिन उसी ने उसके साथ विश्वास घात किया। उसका बेटा चिरागदीन कहता था कि जब तक रम्खा पहलवान है उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है लेकिन उस विश्वासी ने ही चिरागदीन व उसके परिवार की हत्या कर दी इससे बड़ा विनाश कहा देखने को मिलेगा। अतः यह सभी खाई विभाजन के कारण ही उत्पन्न हुई है।

<u>निष्कर्ष</u> :-

अंत मे हम इतना ही कह सकते है कि विभाजन से एक विष का बीज बुब गया। और वह बीज पेड बनकर आज भी लहरा रहा है उसे खत्म ही होगा नहीं तो विनाश और ज्यादा भी देखने को मिलेगा।

Q4. फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्यिक परिचय लिखिए ।

Ans

जीवन-परिचय :- रेणु हिंदी साहित्य के प्रमुख आँचलिक कथाकार माने जाते हैं । उनका जन्म 4 मार्च सन् 1921 ई० को बिहार प्रांत के पूर्णिमा जिले के औराही हिंगना नामक गाँव में हुआ था । 1942 ई० के भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया । 1952-53 में वे बीमार हो गए थे । इनकी साहित्य साधना व राष्ट्रीय भावना को देखकर सरकार ने इन्हें पद्मश्री की उपाधि से अलंकृत किया । अप्रैल सन 1977 ई० को पटना में इनका देहावसान हो गया ।

रचनाएँ :- इनकी उल्लेख रचनाएँ निम्नलिखित हैं
उपन्यास :- मैला आँचल, परती परिकथा, दीर्घतमा, जुलूस
कहानी :- तीसरी कसम, उर्फ मारे गए गुलफाम, पहलवान की ढोलक ।

साहित्यिक विशेषताएँ :- इनकी साहित्यिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं

(i). आँचलिकता :- आँचलिकता कथा साहित्य में रेणु जी का बहुत योगदान है । इन्होंने आँचलिक कथा साहित्य में क्रांति उपस्थित की है । उनका मैला आँचल प्रथम आँचलिकता उपन्यास है । इस उपन्यास से हिंदी जगत को एक नई दिशा प्रदान की । लोकगीत, लोकोक्ति, लोक संस्कृति, लोकसभा एवं लोकनायक की परंपरा को छोड़कर अंचल को ही नायक बना डाला । उनके साहित्य में अंचल कच्चे और अनगढ़ रूप में ही आता है स्वतंत्र्योत्तर भारत

मे रेणु ने आँचलिक समस्याओं और जीवन की ओर ध्यान आकर्षित किया है।

(2) सामाजिक कुरीतियों एवं विषमताओं का चित्रण :- रेणु के साहित्य अंचल की सामान्य समस्याओं, कुरीतियों और विषमता का सजीव अंकन हुआ है। इन्होंने गाँव का इतिहास, सामाजिक और राजनीतिक चक्र सभी की अभिव्यक्ति इनके साहित्य की प्रमुख विशेषता यह है कि ~~सरल~~ रचनाकार गाँव विशेष के माध्यम से पूरे देश की कहानी का चित्रण कर देता है। ठुमरी, रसप्रिया का जस और बात का तरस आदि इनके प्रमुख कहानी रेणु ने ग्रामीणों की कुटीलता एवं विशेषता, लोकगीत, लोकजीवन, परंपराएँ, रूढ़ियाँ, नया जीवन इत्यादि नए कोणों से यथार्थता, गहराई तथा सूक्ष्मता से परखा है।

(3) ग्राम्य जीवन का चित्रण :- ग्राम्य जीवन मे जिस नवीन मूल्यों का उन्मेष हो रहा है। इसे रेणु जी ने अपनी कहानियों मे उभारने की चेष्टा की है। तीसरी कसम, उर्फ मारे गए गुलफाम रेणु की बहुचर्चित आंचलिक कहानी है गाड़ीवान हिरामन मे आधुनिक वास्ते की मानसिक का सफल चित्रण किया है। इस कहानी मे मानव हृदय के अज्ञात कोमल स्थानों और उन पड़ने वाले आघातों की झाँकी, अत्यंत, सहानुभूति - पूर्वक प्रस्तुत की है। उनकी कहानी, हाथ का जस, और बात का तरस से ऐसा ज्ञात होता है जैसे ये ग्रामीण जीवन की कहानियाँ हो। उनकी कहानी, रसप्रिया, सम्पूर्ण लोक कथा, लोक कविता और

लोक संगीत का निचोड़ है। विघटन के क्षण में गाँव को छोड़कर नगरों में जाकर बसने के दर्द की कहानी कही गई है।

(iv) भाषा - शिल्प :- रेणु का कथा - शिल्प एक कैमरामैन जैसा है। अपनी कहानियों में वे छोटे - छोटे बारीक चित्र उभारते चलते हैं। पात्रों के भावों मनः स्थितियों के शब्द चित्र प्रायः रिपोर्ताज शैली में प्रस्तुत किए गए हैं। उनकी भाषा में ओज और सुबोध आँचलिकता है।

Q5 फैसला कहानी का सार लिखिए?

फैसला स्त्री विमर्श पर लिखने वाली मैत्री पुष्पा कि एक बहुचर्चित तथा बहुआलोचित कहानी है। कहानी मे लेखिका ने स्त्री की चिरबंदनी मुक घावं को तोडकर विद्रोह की भावना प्रदान की है कहानी का सार इस प्रकार है,

बसुमती अपने मास्टर सहाब को पत्र लिखते हुए कहती है की वह ग्राम कि प्रधान चुन ली गई है। गॉव की औरत है स्त्रीप्रधान गॉव से उत्साहित है उनके पति रनवीर पहले से ही ब्लॉक प्रमुख है। गॉव की औरते 'पपनवारा' मे एक दुसरे को अपना सुख - दुख सुनाती है परंतु अब प्रधान बन जाने के कारण पपनवारी मे उसका जाना शोभनीय नही माना जाता है। उसके प्रधान बन जाने से उसके पति की प्रतिष्ठा बढ गई है। गॉव की एक बकरियाँ चराने वाली अनपढ स्त्री इसुरिया पपनवारा मे स्त्री पुरुष समानता की बात करती है तथा उससे पूछती है की वह तो अपने पति रनवीर की तरह अन्याय तो नही करेगी। जब वह इन स्त्रीयो के साथ पंचायत मे जाने लगती है, तो रनवीर उसे वहाँ जाने से मना करते है। स्त्रीयाँ रनवीर का विद्रोह करती है। रनवीर की आग्नेय दृष्टि देखकर उसे घर वापस आना ही पडता है। व उसकी जगह स्वंय ग्राम प्रधान का भी दायित्व निभाना चाहते है उसे जहाँ - जहाँ रनवीर कहते है वहाँ हस्ताक्षर करने पडते है अधिक चापलूसी -बाजी करने के कारण गॉव की स्त्रीयाँ उसे ताने देती है। जब वह अपने पति से ग्राम सुधार की बात करती है तो रनवीर उसे तीव्र भावा

मे समझाते हैं। एक बार गाँव की क्षिा अपनी लड़की हरदेयी को फैसला करने के लिए उसे पंचायत मे चलने के लिए कहती है। जब वह फैसला हरदेयी के पक्ष मे करती है तो रणवीर उससे न केवल झगड़ते है अपितु उसका फैसला भी उलट देती है गलत फैसले से तंग आकर हरदेयी आत्म हत्या कर लेती है। रणवीर उसका झूठा आरोप उसके पति पर लगाकर उसे जेल भिजवा देते है जबकी उसकी हत्या का असली दोषी हरदेय का पिता साफ बच जाता है। यह घटना उसे अंदर से हिला देती है। उसके अंदर की स्त्री शक्ति को उभार देती है। अगले ब्लॉक प्रमुख के चुनाव आ जाते है। इन चुनावो मे ग्राम ब्लॉक के ग्राम प्रधानो को वोट देकर अगला ब्लॉक प्रमुख चुनना है। ब्लॉक प्रमुख के लिए मात्र दो ही प्रत्याशी है एक रणवीर और एक लुहार का लड़का। इस चुनाव मे वह अपने पति को वोट न देकर लुहार के लड़के को वोट देती है। लुहार का लड़का मात्र एक वोट से जीत जाता है। पत्र के अंत मे वह लुहार के पुत्र वोट देने का कारण समझाती है। लेकिन मैं क्या करती। अपने भीतर की इस्त्रीपा को नही मार सकी, क्षमा करना',

Date :

Q6. पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में राष्ट्रीयतावादी संप्रदाय के योगदान को प्रतिपादित कीजिए ?

Ans

राष्ट्रीयतावादी संप्रदाय :- राष्ट्रीयतावादी संप्रदाय में वे विद्वान आते हैं, जो मानते हैं कि देश में प्रयुक्त की जाने वाली पारिभाषित शब्दावली के लिए केवल संस्कृत के शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए। इस विचार के प्रवर्तक डॉ. रघुवीर थे। उन्होंने अखिल भारतीय पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने इस विषय में निम्नलिखित मत प्रस्तुत किए-

1. शब्द और विचार एक-दूसरे से पूर्ण रूप से संबंधित होते हैं नए विचारों के साथ नए शब्दों की आवश्यकता होती है
2. हम एक भी शब्द को नए विदेशी भाषा से नहीं ले सकते।
3. हमें नए शब्द संस्कृत भाषा से ही लेने होंगे या उन्हें संस्कृत के आधार पर रचने होंगे।
4. संस्कृत में बनाए गए शब्द पारदर्शी और पूर्ण रूप से स्पष्ट होंगे।
5. संस्कृत में 600 धातुएँ, 80 प्रत्यय और 26 उपसर्ग हैं जिससे लाखों - करोड़ों शब्द आसानी से बनाए जा सकते हैं
6. भारतीय नौजवानों और वैज्ञानिक संस्कृत पर आधारित पारिभाषिक शब्दों को सरलता से समझ पाएंगे।

दूसरी और देश के विद्वान मानते हैं कि राष्ट्रीयवादी विचारकों के इन विचारों को पूरी तरह से स्वीकार नहीं किया जा सकता। क्योंकि वे हिंदी में प्रचलित विदेशी शब्दों को या देशी और तद्भव शब्दों को ग्रहण करने से इन्कार करते हैं इसका परिणाम यह होगा की पारिभाषिक शब्दावली

आवश्यकता से भी अधिक जटिल हो जाएगी और भाषा में उसका प्रयोग सरलता से नहीं हो पाएगा। लेकिन शुद्धतावादियों का मानना है कि अंग्रेजी में ग्रीक और लैटिन धातुओं के प्रयोग से पारिभाषिक शब्दों का निर्माण हुआ है पहले वे भी जटिल थे एक बार में चलन में आ जाने पर उनकी जटिलता समाप्त हो गई थी। संस्कृत के जटिल शब्दों के भाग्य का भी निर्माण स्वयं हो जाएगा। यदि वे अंग्रेजी / विदेशी शब्द उपयोग या संपर्क के कारण अब जटिल व स्पष्ट लगते हैं। संस्कृत शब्दों से बनी जटिल पारिभाषिक शब्दावली भी अपने आप बाद में आसान लगने लगेगी।

इस संदर्भ में आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा का मानना है "कि पारिभाषिक शब्दावली सामान्य बोलचाल में ही नहीं आती है यह तो केवल विशेषज्ञों द्वारा ही प्रयोग की जाती है। यह शब्दावली तो भावी पीढ़ी के लिए है इसलिए इसका जटिल होना स्वाभाविक है"

इधर भारत के ही कुछ प्रयोगवादी अथवा हिंदुस्तानी संप्रदाय के विद्वानों का मानना है कि भारत एक मिली-जुली संस्कृति है इसीलिए पारिभाषिक शब्द ऐसे होने चाहिए जो संस्कृत, अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी, तद्भव-देशज शब्दों के सहयोग से बने हों। इस संप्रदाय के लोगों तथा विद्वानों ने जो कुछ पारिभाषिक शब्द बनाए हैं जो हास्यास्पद प्रतीत होते हैं।

Q7 हिन्दी कहानी के उद्भव एवं विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिए ?

Ans अनादि काल से ही मानव किसी न किसी रूप में कहानी कहता और सुनता आया है। यही कारण है कि संसार के सभी देशों में लोक कथाओं तथा उपदेश कथाओं का एक लंबा इतिहास देखा जा सकता है भारत में ऋग्वेद ब्राह्मण ग्रंथों, उपनिषदों, पुराणों, जैन साहित्य, बौद्ध साहित्य, जातक साहित्य आदि में असंख्य कहानियाँ बिखरी पड़ी है। विशेषकर संस्कृत में पंचतंत्र, हितोपदेश तथा कथासरित्सागर की कहानियां आज भी काफी लोकप्रिय है लेकिन ये कहानियाँ आधुनिक हिंदी कहानी से सर्वथा अलग है क्योंकि इनमें मात्र वर्णनात्मक तथा उपदेशात्मक होती है कुछ विद्वानों इंशा अल्लाह खाँ द्वारा रचित 'रानी केतकी की कहानी' को प्रथम कहानी मानते है राजा भोज का सपना, ग्यारह वर्ष का समय, इन्दुमती, दुलाई वाली आदि कहानियों के बारे में भी प्रचलित चर्चा हुई है लेकिन आधुनिकतम शोध के बारे में भी प्रचलित चर्चा हुई है लेकिन आधुनिकतम शोध के आधार पर माधव प्रसाद द्वारा रचित 'एक टोकरी भर मिट्टी' हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी स्वीकार की गई है डा० लालचंद गुप्त ने इसी कहानी को हिंदी की प्रथम कहानी घोषित किया। हिंदी कहानी की विकास यात्रा की विवेचना कीजिए —

विकास यात्रा
- (1) पूर्व प्रेमचंद यात्रा
- (2) प्रेमचंद युग
- (3) प्रेमचंदोत्तर युग
- (4) स्वातन्त्र्योत्तर युग

(1) पूर्व प्रेमचंद युग :- हिंदी कहानी के विकास की यात्रा 'सरस्वती' तथा 'इन्दु' नामक पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ शुरू होती है सन 1907 मे बंग साहित्य की कहानी 'दुलाईवाली' प्रकाशित हुई। 1907 मे वृंदावन लाल वर्मा द्वारा रचित कहानी 'राखी 1909 बन्द भाई' का प्रकाशन हुआ। इधर इन्दु नामक पत्रिका के माध्यम से श्री जयशंकर प्रसाद ने हिन्दी कहानी साहित्य मे कदम रखा उनके द्वारा रचित दो कहानियाँ 'ग्राम (1910) तथा रसीया बालम (1912) में इन्दु पत्रिका मे प्रकाशित हुई। इन दोनों कहानियों मे नवीन भावपूर्ण कल्पना की प्रधानता है। प्रेमचंद पूर्व युग में चंद्रधर शर्मा गुलेरी का नाम भी दर्शाया जाता है इनके द्वारा रचित कहानी 'उसने कहा था' अत्यंत लोकप्रिय हुई थी।

२ प्रेमचंद युग :- कहानी के स्वरूप और गठन को प्रेमचंद युग मे विशेष सफलता प्राप्त हुई है घटना-विन्यास की वक्रता, पात्रों का शील-वैचित्र्य तथा मानसिक अन्तर्द्वन्द, सजीव तथा व्यावहारिक, कथोपकथन, देशकाल का कथन और संचालित वर्णन, शाश्वत जीवन मूल्यों का उद्घाटन आदि कथा विधान के स्थायी अंग बन गए थे। इस युग मे गद्य भाषा के सभी रूपों का प्रयोग हुआ है यही नहीं प्रेमचंद युग मे वर्णात्मक, आत्मकथात्मक, प्रतीकात्मक एवं भावात्मक कहानियाँ लिखी गई है 'पंच परमेश्वर' कहानी के प्रकाशन के बाद हिंदी कहानी साहित्य मे नवीन परंपराओं और नवीनयुग का प्रवर्तन हुआ। इनकी भाषा सरल व सहज रूप की है

(3) प्रेमचन्दोत्तर युग :-
प्रेमचंद के बाद हिंदी कहानी का युग विविध कोणो मे फैला । इस युग मे अनेक मनोवैज्ञानिक कहानीयाँ लिखी गई है । जैनेन्द्र कुमार, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी इस युग के प्रमुख रचनाकार है इनकी कहानियो मे व्यक्तिवादी स्वर की प्रधानता है जैनेन्द्र ने शिल्प और भाव दोनो दृष्टियो से उत्कृष्ट कहानियाँ लिखी है वे प्राय: पारिवारिक जीवन को ही अपनी कहानीयो का युग मानते है उन्होने पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करते हुए कुछ सफल कहानीयाँ लिखी है स्पर्धा, ध्रुव-यात्रा, वातायन, जय संधि - पाजेब तथा फांसी है इस काल के अन्य कहानीकारो मे भगवती प्रसाद वाजपेयी, भगवती शरण शर्मा, जानकी वल्लभ शास्त्री जी के नाम गिनवाए जा सकते है ।

(4) स्वतंत्र्योत्तर युग :- सन 1950 तक आते-आते हिंदी कहानी मे कथ्य और शिल्प दृष्टि से नवीन प्रयोग होने लगे । लम्बी मंजील पार करने के बाद हिंदी कहानी नई कहानी के नाम से प्रसिद्ध हो गई । नई कहानी मे जीवन की विविधता और जटिलता का चित्रण देखा जा सकता है नई कहानी मे भाव - बोध और भाव सौंदर्य सौन्दर्य के नए स्तर देखे जा सकते है सन 1950 के बाद लिखी गई कहानी को स्वतंत्र्योत्तर कहानी का नाम दिया गया । निष्कर्षत: हम यह कह सकते है कि वर्तमान हिंदी कहानी की प्रमाणिक अभिव्यक्ति के लिए प्रसिद्ध है वस्तु शिल्प और भाषा के नए आयाम देखे जा सकते है

Q8 हिन्दी गद्य का विकास स्पष्ट कीजिए ?

Ans

भूमिका :- आधुनिक हिंदी साहित्य मे गद्य का जितना महत्व है उतना अतीत मे कभी नही रहा। और इसलिए आचार्य शुक्ल ने काल - विभाजन के अंतर्गत दोनो नाम देते हुए इस काल को गद्य काल के नाम से पुकारा है। राष्ट्रीय जागरण काल की सबसे बड़ी उपलब्धि काव्य और गद्य के विकास मे खड़ी बोली को अपनाने मे रही। खड़ी बोली को विकास मे आने पर गद्य का विकास तेजी से हुआ।

राजस्थानी गद्य :- हिंदी साहित्य मे वीरगाथा काल मे राजस्थान की संस्कृति और साहित्य का केन्द्र रहा। इसलिए उस समय साहित्य की भाषा शैली राजस्थानी थी। जो डिंगल के नाम से जानी जाती है। यद्यपि इस काल की अधिकांश रचनाएँ पद्य मे हैं पर फिर भी अधिकांश रचनाएँ पद्य मे है। पर फिर भी कुछ ऐसी रचनाएँ है जो गद्य मे लिखी गई हैं। इस काल मे प्राचीन राजवंशो के शिलालेख दान - पत्र, पट्टे - परवाने, ख्याते, बाते तथा जैन धर्मग्रन्थो के रूप मे राजस्थानी गद्य प्राप्त होता है। ख्यात। राजवंशो से संबंधित कल्पना मिश्रित ऐतिहासिक कथाओ को कहते है। बाद मे इसमे ब्रज भाषा का प्रयोग बढ़ गया है राजस्थानी गद्य का निर्माण लगभग बन्द हो गया।

ब्रज गद्य का प्रयोग :- ब्रजभाषा गद्य का सर्वप्रथम लेखक किसी गोरख पंथी राजस्थानी लेखक को माना

जाता है। "गोरख सार" गोरख गणेश गोष्ठी, महादेव गोरख संवाद इन की गद्य रचनाएँ हैं। सन 1345 के पश्चात ब्रज के साहित्य क्षेत्र में प्रतिष्ठा हो जाने के पश्चात इसमें गद्य में अनेक रचनाएँ रचित हुई, पर गद्य ग्रंथों की तुलना में इनकी संख्या लगभग नगण्य है। लगभग 500 वर्ष तक उत्तरी भारत की साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रज में असंख्य ग्रंथ साहित्य को प्रधान प्रदान किए पर गद्य में रचित पुस्तकों की संख्या एक-दो दर्जन से अधिक नहीं है। राधावल्लभी संप्रदाय के प्रवर्तक हितहरिवंश की पत्री की तत्कालीन ब्रज भाषा का नमूना है। 1795 ई. में जयपुर नरेश प्रताप सिंह की आज्ञा से हीरालाल ने आइने-अकबरी की भाषा वचनिका नामक खड़ी पुस्तक लिखी टीकाकार मूल पाठ को स्पष्ट नहीं कर पाए हैं।

खड़ी बोली का गद्य :- खड़ी बोली दिल्ली के आस-पास बोली जाने वाली जन साधारण भाषा है। मुस्लिम काल में शासकों के द्वारा फारसी को राजभाषा का स्थान प्राप्त था और यह भाषा राजकार्यों में प्रयोग की जाती थी। परंतु आम बोलचाल में खड़ी बोली का प्रयोग किया जाता था। हिंदू मुस्लिम परस्पारिक संबंध, मित्रता और संबंधों के कारण खड़ी बोली निरंतर प्रयोग होती रही। 15 वी शताब्दी में गुजरात और दक्षिण भारत में मुस्लिम शासन स्थापित होने से उत्तर भारत की यह बोली उन प्रांतों तक पहुँच गई और धीरे-धीरे यह बोली गद्य की सर्वप्रथम रचना अकबर के दरबारी कवि गंग की चंद-छन्द बरनन की महिमा है यह सन 1570 में लिखी गई।

इसमें उर्दू-फारसी तथा राजस्थानी शब्दों की भी अधिकता पाई गई है।

लेखक चतुष्टय :- खड़ी बोली गद्य के विकास की परंपरा में सदासुख लाल, लल्लू जी लाल, निजाम और सदल मिश्र के नाम उल्लेखनीय हैं सन् 1800 ई० में फोर्ट विलियम नामक कॉलेज की स्थापना हुई। लल्लू जी लाल और सदल मिश्र दोनों ही इस कॉलेज में काम करते थे। परंतु सदा सुख लाल और इंशा अल्ला खाँ ने स्वतंत्र रूप से खड़ी बोली गद्य में लिखी। इस प्रकार इन कवियों ने अपनी कविताओं की रचना की और इनका वर्णन इस प्रकार है

(i) सदा सुख लाल :- ये दिल्ली निवासी थे और कंपनी की नौकरी करते थे। ये उर्दू फारसी में शायरी करते थे। और इन्होंने इस भाषा में अनेक पुस्तकें लिखीं। नौकरी से रिटायर होकर इन्होंने विष्णु पुराण से एक अध्याय लेकर एक पुस्तक लिखी। और श्रीमद्भागवत के नाम से स्वतंत्र अनुवाद किया है। इन्होंने हिन्दुओं की बोलचाल की शिष्ट भाषा का प्रयोग किया। पर उनके गद्य में जगह-जगह पंडिताऊपन है।

(ii) ईशा उल्ला खाँ :- ये उर्दू के प्रसिद्ध शायर थे। अनेक नवाबों की सेवा में रहकर उन्होंने काफी प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। डॉ शिवदान सिंह चौहान के शब्दों में गद्य में मुहावरों का ऐसा प्रयोग पुनर्जागरण किसी लेखक ने नहीं किया था।

(iii) <u>लल्लू जी लाल</u> :- ये आगरा निवासी गुजराती ब्राह्मण थे। ये कवि थे और इन्हें उर्दू आती थी। पर ये संस्कृत के विशेष जानकार नहीं थे। इन्होंने भागवत के दशम स्कन्ध की कथा को लेकर प्रेमसागर नामक पुस्तक की रचना की। इनकी भाषा ब्रज और उर्दू बहुत ही प्रभावित है।

<u>ईसाई सहयोग</u> :- कुछ आलोचक अंग्रेजी शासन और ईसाई धर्म प्रचारकों को आधुनिक खड़ी बोली का जनक मानते हैं जो की भ्रमक ही इसका उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार करना था। हिंदी गद्य की उन्नति करना नहीं था। यद्यपि अंग्रेज 15 वी शताब्दी से भारत में आ गए। परंतु 18 वी शताब्दी तक उन्होंने अपना धर्म प्रचार नहीं किया था। सन 1813 में विलफोर्स नामक एक्ट होने से उन्हें धर्म प्रचार करने की स्वतंत्रता मिल गई। अंग्रेजी सरकार ने हिंदु सभ्यता और संस्कृति के अध्ययन के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए।

Q1 नई कहानी के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उसके विकास पर प्रकाश डालिए

अथवा

" नई कविता के समान नई कहानी का भी विकास हुआ है। इस कथन के संदर्भ में नई कहानी के स्वरूप और विकास पर प्रकाश डालिए।

Ans <u>अर्थ एवं स्वरूप</u> :- सन 1950 से हिंदी साहित्य मे हिंदी कविता के समान हिंदी कहानी मे भी यथार्थवादी प्रवृत्तियो का विकास होने लगा। फलस्वरूप नई कविता के समान नई कहानी का नारा बुलंद हुआ। आगे चलकर नवोदित कहानीकार अपनी कहानियो मे नग्न यथार्थ का स्वच्छंद रूप से चित्रण करने लगे। आधुनिकता, समसामयिकता, नूतनता इत्यादि शब्दो के माध्यम से अपनी भोगवादी प्रवृत्तियो का उद्घाटन करने लगे। वस्तुतः डा॰ नामवर सिंह ने ही कहानी पत्रिका से नई कविता के समान नई कहानी को जन्म दिया। प्रश्न ये उत्पन्न होता है कि इस कहानी मे नयापन क्या है। सच्चाई तो यह है कि स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद एक दशक तक नई कहानी के नयापन मे कुछ भी नही था। लेकिन इसके बाद हमे नई कहानियों मे नयापन दिखाई देने लगा था। इसीलिए नई कहानी का नाम चल निकला। सन 1950 ई॰ मे ही राजकमल प्रकाशन द्वारा मे नई कहानियो का प्रकाशन होने लगा था। इसके संपादक श्री भैरव प्रसाद गुप्त थे। डा॰ नामवर सिंह ने नई कहानी के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए लिखा है कि नव लेखन के व्यापक परिवेश को देखते हुए नई कविता के वजन पर कहानी मे भी नई कहानी का प्रश्न उठाना स्वाभाविक संगत है अधिकांश विद्वानो ने यह प्रश्न उठाया है कि क्या स्वातन्त्र्यो

कहानी प्रेमचंद कहानियों की परंपरा से इतनी भिन्न है कि उसे कोई नया नाम दिया जाए। इस दृष्टि से 'नई कहानी', 'लहर, कल्पना, और छोटी पत्रिकाओं में इस विषय पर कहानी संग्रह की भूमिकाओं में नई कहानी के स्वरूप को स्पष्ट का प्रयास किया है यद्यपि डॉ॰ पशुपाल सिंह ने नई कहानी की प्रवृत्तियाँ गिनवाई है कुछ नए कहानीकार भी उनके साथ जुड़े हुए थे - मार्कंडेय, शिवप्रसाद सिंह और निर्मल वर्मा।

2. विकास क्रम :— नई कहानी का आरंभ निर्मल वर्मा की कहानी परिंदे से स्वीकार किया गया है यद्यपि इसकी भूमिका में कुछ अन्य कहानियों पर भी विचार किया गया है लेकिन अंतत: परिंदे को ही नई कहानी की संज्ञा दी गई है डॉ॰ नामवर सिंह तथा देवी शंकर अवस्थी ने नई कहानी के सिद्धांत पक्ष पर काफी चिन्तन किया है। तत्पश्चात् नई कहानीकारों पर भी चर्चा हुई है धीरे-धीरे नई कहानीकारों की शाखाएँ बनती चली गई है

3. नई कहानी की प्रवृत्तियाँ :— (1) नई का विचार पक्ष मार्क्सवाद तथा आस्तित्ववाद से परिचित है फिर भी नई कहानी की विचारधाराओं में संतुलन देखा जा सकता है इसमें जितनी सामाजिकता है, उतनी ही वैयक्तिकता भी है भले ही निर्मल वर्मा की कहानी समाज निरपेक्ष दिखाई देती है लेकिन अमरकांत मार्कंडेय, भीष्म साहनी आदि सही अर्थों में प्रगतिशील कहानीकार कहे जा सकते है फणीश्वरनाथ रेणु, राजेन्द्र यादव, मन्नू भंडारी की कहानियों में समन्वय देखा जा सकता है।

(2) वस्तुत: नई कहानी समकालीन भारतीय समाज के परिवर्तित रूप

की पहचान है। आज पारिवारिक जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आ चुका है। ये नई कहानी इस परिवर्तन पर प्रकाश डालती है इस संदर्भ में हम भीष्म साहनी की कहानी 'चीफ की दावत' का उदाहरण दे सकते हैं। जिसमें माँ-बेटे के संबंधो का वर्णन किया गया है नई कहानियों में उषा प्रियवंदा की कहानी 'वापसी' का उल्लेख करना भी आवश्यक होगा। इस कहानी में बूढ़ा पिता नई पीढ़ी के जीवन से सांमजस्य नहीं बैठा पाता है। वह नौकरी से सेवानिवृत्त होने के बावजूद घर छोड़कर चला जाता है

4 प्रमुख कहानीकार :- डा. गणपति चंद्रगुप्त ने नई कहानियों की प्रवृत्ति के बारे में लिखा है। नई कहानियाँ आधुनिक युगबोध से संबंधित है। प्रत्येक नए कहानीकार ने यथार्थ को अपनी दृष्टि से देखने का प्रयास किया है अस्तित्ववाद, यथार्थवाद, मार्क्सवाद, प्रतिबद्धता आदि नई कहानी की कुछ उल्लेखनीय प्रवृत्तियाँ हैं। नया कहानीकार आधुनिक युगबोध को यथार्थ की दृष्टि से देखता है इनमें उल्लेखनीय कहानीकार निम्नलिखित हैं :-

राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, मोहन राकेश, मन्नू भंडारी, कृष्ण बलदेव वैद, अमरकांत भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती, दूधनाथ सिंह, ज्ञानरंजन, रवींद्र कालिया, गंगाप्रसाद विमल, काशीनाथ सिंह आदि आँचलिक परिवेश का चित्रण करने वालो में फणीश्वरनाथ रेणु, मार्कण्डेय, शिवप्रसाद सिंह, शैलेश मटियानी, लक्ष्मीनारायण लाल, राजेन्द्र अवस्थी आदि हैं

Q10 हिंदी एकांकी के विकास क्रम का संक्षिप्त परिचय दीजिए,
अथवा
हिंदी एकांकी के विकास पर एक संक्षिप्त निबंध लिखिए,

Ans एकांकी आधुनिक हिंदी गद्य की एक स्वतंत्र विधा है कुछ लोग एकांकी को नाटक का लघु रूप मानते हैं। लेकिन यह उचित नहीं है। नाटक और एकांकी दो अलग-अलग विधाएँ हैं सिद्धांत रूप में जिस नाटक की कथावस्तु एक ही अंक में वर्णित होती है उसे एकांकी या एकांकी नाटक कहते हैं। नाटक का यह रूप आज अत्याधिक लोकप्रिय हो चुका है। उसका स्वतंत्र अस्तित्व बन चुका है।

1 आधुनिक एकांकी का उद्भव :– प्राचीन भारत में नाट्य साहित्य में एकांकी नाटक भी मिल जाता है लेकिन आधुनिक नाटक एकांकी का स्वरूप है। इस पर अंग्रेजी एकांकी का प्रभाव देखा जा सकता है। अंग्रेजी एकांकी का जन्म दसवीं शताब्दी के लगभग हुआ था। उस समय के ईसाई पादरी अपनी धार्मिक शिक्षा का प्रचार करने के लिए इसका प्रयोग करते थे। अंग्रेजी में एकांकी का जन्म धार्मिक उन्नायकों से हुआ था। ऐसा कहा जाता है कि सन 1903 में जौकब की कहानी 'बंदर का पंजा' एकांकी के रूप में प्रस्तुत किया गया। यह प्रदर्शन बड़ा ही प्रभावशाली रहा और धीरे-धीरे एकांकी लोकप्रिय होने लगा था। यद्यपि भारतेंदु हरिश्चंद्र के विषय विषमौषधम्, बाल कृष्ण भट्ट द्वारा रचित 'शिक्षादान', जैसा काम वैसा परिणाम, प्रतापनारायण द्वारा रचित जुआरी जुआरी, देवकी नंदन द्वारा रचित एक-एक के तीन-तीन, कालिपुगी

अनेक तथा राधाचरण गोस्वामी के द्वारा रचित तन-मन-धन गोसाईं जी के अर्पण, बूढ़े मुँह मुहासे आदि प्रसिद्ध एकांकी हैं। धनंजय विजय, विषौषधम्, वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, अंधेर नगरी आदि एकांकी लिखे गए थे। जो एकांकी हिंदी साहित्य में लिखे गए, उनका आरंभ 1930 में माना जा सकता है। हिंदी एकांकी का इतिहास लगभग 65 वर्षों का है। इसे हम तीन चरणों में विभक्त कर सकते हैं।

एकांकी के चरण

↓

(1) प्रथम चरण (2) द्वितीय चरण (3) तृतीय चरण

(1) <u>प्रथम चरण</u> :- हिंदी एकांकी साहित्य को विकासोन्मुखता प्रदान करने वाले एकांकीकारों में भुवनेश्वर प्रसाद, डॉ० रामकुमार वर्मा, गोविन्द वल्लभ पंत, सेठ गोविंद दास, नरेश प्रसाद द्विवेदी, पांडे बेचन शर्मा 'उग्र' तथा सदगुरु शरण अवस्थी के नाम गिनवाए जा सकते हैं।

<u>भुवनेश्वर</u> :- भुवनेश्वर के 'कारवां' एकांकी संग्रह में कुल 6 एकांकी हैं तथा इनका प्रतिपाद्य प्रेम है। ये बर्नार्ड शॉ से प्रभावित दिखते हैं भुवनेश्वर के नाटकों में बौद्धिकता की प्रधानता है 'कठपुतलियाँ' आदि इनके कुछ प्रतीकात्मक एकांकी भी हैं डॉ० रामकुमार वर्मा ने लगभग 100 एकांकी लिखी हैं पहले बताया जा चुका है कि 'बादल की मृत्यु' इनका पहला एकांकी है इनकी प्रसिद्ध एकांकी संग्रहों में 'पृथ्वीराज की

आखें, चारुमित्रा, रेशमी टाई, सप्तकिरण, विभूति, दीपदान, रूपरंग इन्द्रधनुष, ध्रुवतारिका हैं डा. वर्मा के एकांकी को ऐतिहासिक, सामाजिक, पौराणिक और हास्य चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

(2) द्वितीय चरण :- उदय शंकर भट्ट हिंदी के एक अन्य उल्लेखनीय एकांकीकार हैं, जिन्होंने हिंदी एकांकी कला को काफी प्रसिद्ध किया। उनका प्रथम एकांकी संग्रह 'अभिनव एकांकी' के नाम से सन् 1940 में प्रकाशित हुआ। इन्होंने प्राय, सामाजिक और पौराणिक एकांकी लिखे हैं। कालिदास और नया आदम युग में पौराणिक एकांकी संकलित हैं 'स्त्री का हृदय' तथा 'समस्या का अंत' एकांकी संग्रहों में सामाजिक एकांकी संकलित हैं सेठ गोविंद दास ने राजनैतिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, तथा सामाजिक एकांकी लिखे हैं। स्पर्धा, सप्तरश्मि, पंचभूत, अष्टदल आदि इनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं

3 तृतीय चरण :- आधुनिक एकांकिकारों में विष्णु प्रभाकर का नाम महत्वपूर्ण हैं उन्होंने सामाजिक, राजनैतिक, हास्य व्यंग्य प्रधान तथा मनोवैज्ञानिक सभी प्रकार के एकांकी लिखे हैं। माँ, भाई रहमान का बेटा, नया कश्मीर, मीना कहाँ हैं आदि इनके एकांकी हैं इस युग के एकांकीकारों में जगदीशचंद्र माथुर, लक्ष्मी नारायण मिश्र, वृंदावन लाल वर्मा तथा भगवती चरण आदि के नाम गिनवाए जा सकते हैं माथुर जी एक प्रतिभा-संपन्न एकांकीकार हैं वे एकांकी कला तथा रंगमंच में पूर्ण ज्ञाता थे।

Seen

फणीश्वर नाथ रेणु

जीवन परिचय => फणीश्वर नाथ रेणु हिंदी साहित्य के आंचलित कथाकारो मे अग्रिमी थे। उनका जन्म 4 मार्च 1921 को बिहार प्रांत के पूर्णिमा जिले के औराही हिंग्ना नामक गाँव मे हुआ था। 1942 के भारत छोडो आंदोलन मे बढ़-चढ़ कर भाग लिया। 1952, 1953 मे वे बीमार हो गए इनकी राष्ट्रीय साधना तथा राष्ट्रीय भावना को देखकर उन्हे पद्मश्री की उपाधि से सम्मानित किया। 11 अप्रैल 1977 को पटना मे इनका देहांत हो गया।

रचनाएं => (i) उपन्यास => मैला आंचल, परती परी कथा कुमरी

कहानी => तीसरी कसम, उप मारे गए गुलफाम, पहलवान की ढोलक।

साहित्यिक विशेषताएं: (i) आंचलिकता => फणीश्वर नाथ रेणु ने आंचलिक कथा साहित्य मे एक क्रांति उत्पन्न की थी। इसके अलावा राजनीतिक तथा सामाजिक आंदोलनो मे भी सक्रिय भाग लिया। "मैला आंचल" उनका प्रथम आंचलिक, उपन्यास इस अवधारणा मे उपन्यास और कथा साहित्य मे भारण सक्रृति प्रदान की।

2. **सामाजिक कुरीतियो और विषमताओ का चित्रण =>** रेणु जी के साहित्य मे गांव का इतिहास भूगोल और सामाजिक और राजनीतिक सभी चक्रो का वर्णन है। इन्होने उपन्यास के

से आंतरिक सच्चाई को उठाने का सफल प्रयास किया है।

3. ग्राम्य जीवन का चित्रण => आधुनिक व्यक्ति के मन का विश्लेषण एवं अंतर द्वन्द्वों के प्रकाशन में रेणु का पूरा स्पर्श हो सकता है। इस दृष्टि से उनकी कहानी तीसरी कसम "उर्फ मारे गए गुलफाम" अपने कल्पना के साथ प्रस्तुत सशक्त रचना है। इन कहानियों में उड़ाल इसके साथ ही इस समस्या को खुलासा हुआ।

रेणु की कहानी तीन बिंदियां सचमुच ही ठुमरी धर्मी है। उनकी कहानी हवा का पक्ष और बात का सत से भान होता है कि यह कहानी नगर से आकर देखी गई गांव की कहानी है। रेणु की कहानी आदिम रात्रि की महक सशक्त आंचलिक रचना है। कुत्ते को रोककर कर्मों को देखना धान के खेतों के बीच से गुजरने वाली पगडंडी पकड़कर कर्मों का चलना। धान की बालियों का अभी फूटकर न निकलना आदि ग्रामीण अंचल के जीवन को साकार कर देने के लिए है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि

जीवन परिचय => प्रसिद्ध दलित लेखक श्री ओमप्रकाश का जन्म 1950 में उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले में हुआ था। बरला नामक गाँव में हुआ था। अपने अध्ययन काल में अनेक भेदभाव को झेलते हुए वह आर्थिक संकट को सहते हुए भी इन्होंने हिंदी विषय में स्नातकोत्तर की उपाधि ग्रहण की। वाल्मीकि जी ने महाराष्ट्र के विशेष लेखकों के संपर्क में आने के बाद बाबा साहब डा० भीमराव अंबेडकर की रचनाओं का गहन अध्ययन किया। 1993 ई० में वे इन्हें डॉ० अंबेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार से तथा 1995 में परिवेश पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इन्होंने नौकरी में भी कार्य किया।

रचनाएँ => (1) **कविता संग्रह** => सदियों का संताप, बस बहुत हो चुका।

कहानी संग्रह => सलाम, आत्मकथा जूठन।

साहित्यिक विशेषताएँ => (1) **दलित वर्ग के प्रति आक्रोश** =>

युगों से पीड़ित दलित वर्ग के प्रति ओम जी साहित्य अति संवेदनशील हैं। श्री वाल्मीकि इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं है जो लोग उच्च जाति में पैदा होते हैं वो अवस्था में सदा उच्च ही बने रहते हैं। जिसमें ज्ञान है वह किसी जाति से संबंध रखता हो वह भी सभी पदों

को प्राप्त करने का अधिकारी है।

2. वर्ण व्यवस्था और पितृ सत्ता का विरोध => बाल्मिकी जी ने उच्च जातियों के व्यवहार और उत्पीड़न का बार-बार विरोध किया है। ऐसे लोगों ने हिंदी समाज में समानता के तत्व को लगभग नष्ट कर दिया है। जिसके कारण निम्न वर्ग समाज में समानता के तत्वों को लगभग नष्ट कर दिया है। जिसके कारण निम्न वर्ग समाज में निकृष्ट वर्ग बनाकर रह गया है।

3. उच्च वर्ग के झूठे अहं और वर्चस्व की प्रस्तुति => बाल्मिकी जी ने अपने साहित्य उच्च वर्ग के झूठे अहं को बार बार प्रकट किया है। झूठा अहं ही व्यक्ति को समाज में नीचा गिरा देता है। इस कहानी में मास्टर शिवनारायण ने चौथी कक्षा के बच्चे को पहाड़े याद कराए थे। सुदीप ने 25 का पहाड़ा सुनाते हुए अपने पिता के चौधरी पर झूठे विश्वास के कारण गलती कर दी थी, तो मास्टर जी ने उसे पीटा ही नहीं बल्कि गालियां भी दी। "साले चाहे तुम लोगों को "चाहे कितना भी पढ़ा लो रहोगे वही के वही"।

समानता के कौशल => बाल्मिकी जी के हृदय में अपनी जाति के विषय में भिन्नता व हीनता

की भावना नही थी। उन्होने अपने भीतर किसी प्रकार की हीन भावना को नही पनपने दिया। इसी कारण दलित साहित्य को रचने और ग्रंथ मुद्रित करने के लिए साहित्य को बटोरा। उन्होने योग्यता के दम पर अपनी पहचान बनाई।

भाषा शैली => इस कहानी मे लेखक ने सहज और सरल तथा साधारण बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। भाषा मे व्यंग्य के पुट भी स्पष्ट झलकते है। इस कहानी मे भी खडी बोली का प्रयोग किया गया है। लेखक ने सामान्य बोलचाल मे प्रयोग होने वाले शब्दो का जगह-2 प्रयोग किया है। जैसे - कुदीप अभावो के गहरे अंधकार मे रोशनी की उम्मीद से भर गया।

Q- हिंदि के नाटक के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डाले?
उ०→ हिंदी मे नाटक का उद्भव व विकास 19सवीं शताब्दी से स्वीकार किया जाता है। लेकिन दशरथ ओझा ने इस नाटक को 13वी शताब्दी से स्वीकार करते हुए गाय सुकुमार रास को पहला हिंदी नाटक माना है।

भारतेंदु युग =>

भारतेंदु युग राष्ट्रीय जागरण तथा राष्ट्रीय चेतना का युग है। भारतेंदु एक ऐसे नाटककार थे जिन्होने नाटक शास्त्र का गंभीर अध्ययन किया। स्वदेशी और विदेशी नाटको का अनुवाद किया और नाटको की रचना की।

सुधारवादी द्विवेदी युग =>

इस युग मे नाटक को उच्च पद प्राप्त नहीं हो सका। इस युग के नाटककारो को परपरांगत रंगमंच उपलब्ध नहीं हो सका। दूसरा इनका मध्यवर्ग से संबंध टूट गया।

विषय की दृष्टि से इस काल के नाटको को नि० लि० भागो मे बांटा जा सकता है–

(1) कृष्ण चरित्र पर लिखे गए नाटक
2. प्रेमलीला पूर्ण नाटक
3. पौराणिक नाटक
4. सामाजिक नाटक

जयशंकर प्रसाद रूपी नाटक =>

भारतेन्दु के पश्चात प्रसाद जैसा दूसरा कोई भी कलाकार हिंदी मे उत्पन्न नही हुआ। प्रसाद ने हिंदी नाटको को शिखर तक पहुचायां इसलिए वे इस क्षेत्र के सम्राट कहलाते हैं।

ऐतिहासिक नाटक =>

प्रसाद जी ने अनेक ऐतिहासिक नाटक लिखे हैं - चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, अजातशत्रु, ध्रुवस्वामिनी चंद्रगुप्त इनका सबसे बड़ा नाटक है।

पौराणिक और सामाजिक नाटक =>

पौराणिक नाटको के लेखको मे प्रसाद सुदर्शन गोविंद वल्लभ पंत सेठ गोविंद दास माखन लाल चतुर्वेदी आदि के नाम उल्लेखनीय है।

प्रतीकात्मक नाटक =>

प्रसाद और पंत ने प्रतीकात्मक नाटक भी लिखे हैं इनमे विशेष भावनाओ को मानवीकरण करने की क्षमता थी। कामना, ज्योत्सना आदि नाटक इस शैली की है।

समस्या मूलक नाटक =>

हिंदी मे पाश्चात्य लेखको के प्रभाव से समस्या मूलक नाटक लिखे गए। इन नाटको मे नारी की चिरतन समस्याओ को

को लिया गया है। जैसे -सिंदूर की होली, राक्षस का मंदिर। सन्यासी, गुडिया का घर आदि इनके नारी पुरुषो के संबंधो तथा मनोवैज्ञानिक समस्याओ से संबंधित उपन्यास हैं।

अनूदित नाटक =>
अब अन्य भारतीय भाषाओ के नाटको का हिंदी मे अनुवाद करके इसके नाटक साहित्य को समृद्ध किया जा रहा है।

निष्कर्ष =>
आधुनिक हिंदी साहित्य के अन्य विधाओ के मुकाबले मे हिंदी नाटक का विकास अपेक्षाकृत मंद गति से हुआ है। फिर भी इन परिसीमाओ मे भी हिंदी नाटक मे पर्याप्त प्रकाश आशा की जा सकती है।

महावीर प्रसाद द्विवेदी

भारतेंदु एवं उनके समकालीन साहित्यकारों द्वारा जिसे हिंदी साहित्य में जिस आधुनिकता का आरंभ हुआ। उसके प्रभाव से काव्य भाषा में परिवर्तन हुआ। मुगल साम्राज्य के अंतिम दिनों में व्यापारी, शायर, साहित्यकार आदि उत्तर भारत में फैल गए हैं। इस प्रकार खड़ी बोली लगभग सारे भारत और विशेषकर उत्तर भारत की सामान्य बोलचाल भाषा बन गई है। इस काल खंड में नई जानकारी का संचय भाषा की व्यवस्था और रीतिवाद का विरोध साहित्य की वाक्यता के प्रमुख होते हैं। इस कालखंड को महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर द्विवेदी युग कहा जाता है। वे भाषा और साहित्य के जनक थे। भारतेंदु युग में गद्य लेखन जोर-शोर से शुरू हो गया था। किंतु खड़ी बोली हिंदी साहित्य गद्य का स्वरूप स्पष्ट नहीं था। उसमें अनेक बोलियों के शब्द धड़ल्ले से प्रयोग होते थे। द्विवेदी ने इस अस्पष्टता को दूर करने का प्रयास किया। सरस्वती पत्रिका के संपादक के रूप में आई पुस्तक के भीतर व्याकरण और भाषा की अशुद्धियां दिखाकर लेखकों को सावधान कर दिया। द्विवेदी जी शुभ प्रवाह को गद्य की भाषा पर भाषा के लिए शुद्धता आवश्यक समझी जाएगी तब तक समर्थन जब तक प्रचार में वृद्धि होने के साथ-साथ बना रहेगा। हिंदी के

भाषा की एकरूपता की आवश्यकता अनुभव की जाने वाली थी। खड़ी बोली पर अन्य बोलियों का प्रभाव पड़ रहा था। इससे हिंदी के स्वरूप को हानि हो रही थी। द्विवेदी जी ने भाषा एक व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास किया। सरस्वती पत्रिका (1903) में जो लेख लिखवाकर छपते थे। जैसे - वैचारिकता, इतिवृत्तात्मकता एवं गद्यात्मकता की प्रमुख विशेषताएं हैं। यही कारण है कि गलत विधाओं में निबंध इतना महत्वपूर्ण है ये निबंध वैचारिक अवस्था एवं विश्लेषण की दृष्टि से अभूतपूर्व है।

इस काल के श्रेष्ठ निबंधकारों और गद्य लेखकों महावीर प्रसाद, पंडित माधव प्रसाद मिश्र, बाबू बाल मुकुंद गुप्त जी पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी, अध्यापक पूर्ण सिंह प्रमुख है। रामचंद्र शुक्ल के आरंभिक निबंध इसी दौर के है।

प्रेमचंद युगीन साहित्य

उपन्यास हिंदी साहित्य की आधुनिक विधा है। जिसका हिंदी मे उदभ युरोपीय साहित्यिक के प्रभाव के स्वरूप हुआ। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि भारत मे इससे पहले उपन्यास जैसी वस्तु नहीं थी पहले भी उपन्यास थे कुछ विद्वान बाणभट्ट के कादंबरी को भारत का पहला उपन्यास मानते है। इसका प्रमाण यह है कि मराठी साहित्य मे उपन्यास शब्द का पर्यायवाची कादंबरी प्रचलित है। हिंदी उपन्यास की विकास परंपरा को तीन भागो मे बाटा गया है =

(i) **पूर्व प्रेमचंद युग =)** हिंदी का पहला मौलिक उपन्यास श्री निवास दास का परीक्षा गुरु है। यह उपदेशात्मकता प्रवृति प्रधान है। इस काल मे सामाजिक, पौराणिक ऐतिहासिक प्रेम प्रधान, तिलश्मी प्रसाद मिश्रा आदि ने ऐतिहासिक उपन्यास लिखे है। इस काल मे बांग्ला के अनेक उपन्यासो का हिंदी मे अनुवाद किया गया है। इस काल मे देवकी नंदन खत्री, गोपालराम, गहमरी, किशोरी लाल का नाम उल्लेखनीय है।

(ii) **प्रेमचंद युग =)**

प्रेमचंद उपन्यास सम्राट कहलाते है। वे हिंदी के प्रथम मौलिक उपन्यासकार युग प्रवर्तक है। उनके उपन्यास भारतीय किसान और मध्यवर्गीय जीवन की अनेक समस्याओ को चित्रित भी किया है। उनके उपन्यासो मे राजा से रंक तक विचरण करते है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दो मे =)

प्रेमचंद शताब्दियो से पद दलित, अपमानित और उपेक्षित कृषको की आवाज थे। वे असहाय नारी जाति की महिमा की जबरदस्त के वकील थे। वे गरीबो व बेकारो के महत्व के प्रचारक थे। अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार-विचार आव-भाव, रहन-सहन, आसा, आकांक्षा, दुख-सुख और सूझ-बूझ जानना चाहते हैं तो प्रेमचंद के उपन्यास पढे।

जयशंकर प्रसाद चतुर्सेन शास्त्री, प्रताप नारायण श्री वास्तव प्रेमचंद युग के उपन्यासकार थे।

प्रेमचंद के बाद का युग =) प्रेमचंद युग के बाद भी कुछ उपन्यास लिखे गए हैं लेकिन ये भावो की दृष्टि से प्रेमचंद साहित्य से ऊंचा नही है।

सामाजिक उपन्यास =) प्रेमचंद के युग मे पर्याप्त मात्रा मे सामाजिक उपन्यास लिखे गए हैं। इन उपन्यास कारो मे समाज सुधार के नाम पर यथार्थवाद विषयो पर लिखकर अश्लीलता की आड मे वर्जित का चित्रण किया है।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास => इन उपन्यासकारो ने बाह्य संघर्ष के बारे मे वर्णन किया है। बाह्य संघर्ष ने व्यक्ति के आंतरिक संघर्ष का स्थान ले लिया है। जो उपन्यास लिखे गए उन पर अंग्रेजो को प्रभाव था।

ऐतिहासिक उपन्यास => प्रेमचंद युग से पहले जो ऐतिहासिक उपन्यास मिलते है वे केवल नाम के है। वृंदावन लाल वर्मा, राहुल सांस्कृत्यायन हजारी प्रसाद द्विवेदी के नाम उल्लेखनीय है।

आंचलिक उपन्यास => उन्हे कहते हैं जो किसी विशेष प्रदेश की संस्कृति का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास की अपनी शक्ति और परिसीमाए है।

आधुनिकता बोध के अधिकार => आज के उपन्यास को भी आधुनिक औद्योगीकरण, बौद्धिकता, यंत्रीकरण और पाश्चमी विचारधारा ने बहुत प्रभावित किया है। मोहन राकेश बंद कमरे और आने वाला कल आधुनिकता से प्रभावित है।

आधुनिक काल की परिस्थिति

हिंदि के आधुनिक काल का साहित्य का इतिहास संवत 1900 से अंत तक का समय आधुनिक काल के नाम से जाना जाता है। साहित्य मे कोई भी विशेषताए न तो समाप्त होती न ही आरंभ होती है। सम्वत 1900 से एसी कोई सीमा रेखा नहीं है।

जहाँ से पहले के साहित्य को प्राचीन कह दिया जाए और आगे के साहित्य को आधुनिक कहा जाए। सन 1843 या संवत 1900 से पूर्व भी आधुनिक वृति पनपने लगी थी।

बंगाल मे राजा राम मोहन राय और उनके अन्य समकालीन समाज सेवा के कार्यों के माध्यम से नए युग का आरंभ हो चुका था। और यह संवत 1925 को है भारतेन्दु जी ऐसे ही युग प्रवर्तक थे जिन्होने रिति कालीन की वासना धारा को एकाएक मोड़ दिया।

साहित्य मे राष्ट्र भक्ति स्वदेश प्रेम एवं समाज सुधारक की भावना को मजबूत बनाया। इस प्रकार संवत 1850 से 1925 तक का जो समय है वह परिवर्तन की तैयारी का समय है। अतः भारतेन्दु युग से ही वस्तु अर्थों मे आधुनिक युग का आरंभ हुआ।

इसकी निम्नलिखित परिस्थितियां हैं—

(i) राजनीतिक परिस्थितियां :-

सन 1857 ई० में भारतीय आजादी का पहला अध्याय लिखा गया। 1857 की ज्वाला को अंग्रेजों ने दबा तो दिया लेकिन उसे बुझा न सका। कंपनी राज्य विक्टोरिया के शासन में बदला और इतिहास में भयंकर आर्थिक शोषण का युग आरम्भ हुआ। 1885 में कांग्रेस की स्थापना अंग्रेजों के सहयोग से और अपनी अंग्रेज की सहायता के लिए हुई थी।

तिलक ने कहा आजादी मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है मैं उसे लेकर रहूंगा। और सुभाषचन्द्र ने चेतावनी दी कि आजाद हिंद फौज दिल्ली के लाल किले पर हरेज महराएगा और इसी तरह पंजाब के शहीदों ने फांसी के फंदे चूमे और हजारों मुक्त माँ भारती की बेड़ियां काटने के लिए स्वयं काल कोठरियों में बंदी बने अंडमान की सरोवर सबलेर जेल आज अनगणित शहीदों की गाथा सुनाती है। और इसी तरह हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय आंदोलन की गूंज भी सुनाई देती है।

आर्थिक परिस्थिति =>

इंग्लैंड के औद्योगिक विकास का प्रभाव भारत की आर्थिक व्यवस्था पर पड़ना स्वभाविक था। इंग्लैंड के लिए भारत कच्चे माल का सस्ता स्रोत और तैयार माल की बड़ी मंडी से ज्यादा महत्व नहीं रखता था। भारतीय कुटीर उद्योग इंग्लैंड के कारखानों मे बने माल का मुकाबला नही कर सकता। और भारतीय उद्योग नष्ट हो गए।

साहित्यिक परिस्थिति =>

आधुनिक युग का साहित्य आम का साहित्य है। रितकालीन दरबारी ~~संस्कृति~~ संस्कृति नष्ट हो रही थी। इस आधुनिक युग मे कहानी नाटक, निबंध उपन्यास, रिपोर्ट रेखाचित्र एवं आलोचना साहित्य का विकास हुआ।

सामाजिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक दशा =>

यह युग पाश्चात्य शिक्षा एवं संस्कृति के प्रसार का युग है। ब्रह्म समाज प्रार्थना समाज तथा आर्य समाज जैसे सुधारवादी आंदोलन भारतीयो द्वारा भी चलाए जा रहे है। यह युग मूल्यो के संक्रमण का युग था सुधार आंदोलनो एवं पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव से लोगो की चिंतन पद्धति मे अंतर आ रहा था।

परिभाषिक शब्दावली

किसी विशिष्ट ज्ञान शाखा की विशिष्ट अभिव्यक्ति के लिए जो शब्द प्रयुक्त होते हैं उन्हें परिभाषिक शब्दावली कहते हैं। इसके अन्दर अर्थभेद की गुंजाइश नही होती।

इसकी निम्नलिखित सामान्य विशेषताएं इस प्रकार हैं-

(i) उच्चारण से सरल =>

परिभाषिक शब्दो की सबसे पहली विशेषता उच्चारण मे उसका सरल होना है। प्रयोगकर्ता के लिए इन शब्दो का उच्चारण करते समय किसी प्रकार की हिचकिचाहट न हो और न ही किसी प्रकार की परेशानी का अनुभव हो। लेकिन हमेशा प्राथमिकता शुद्धता को ही देनी चाहिए।

(ii) निश्चित अर्थ =>

दूसरे शब्दो को कहा जाए तो परिभाषिक शब्दो का अर्थ सुनिश्चित तथा स्पष्ट होना चाहिए और वह विस्तार से मुक्त होना चाहिए।

(iii) एक ही अर्थ का परिचायक होना =>

परिभाषिक शब्दावली के शब्दो का अर्थ किसी एक ही अर्थ का परिचायक होना चाहिए। और एक ही शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

(iv) अल्पाक्षर =

परिभाषिक शब्दावली मे जो शब्द है

वह छोटा होना चाहिए ताकि प्रयोगकर्ता को उच्चारण करते समय किसी प्रकार की कोई असुविधा न हो।

v) एक ही मूल शब्द से निर्मित =>

पारिभाषिक शब्द जहां तक हो सके एक मूल से निर्मित होने चाहिए ताकि प्रयोगकर्ता को कोई परेशानी ना हो।

vi) जनशक्ति का गुण =>

किसी भी मूलपारिभाषिक शब्द के लिए जनशक्ति के गुण अनिवार्य है ताकि समय पड़ने पर उपसर्ग, प्रत्यय या अन्य शब्द जोड़कर एक नया तैयार किया जाए सके।

जैसे - Act + ed - Acted Con + dence - Condence

Peri + meter - Perimeter - परिमाप

vii) समान श्रेणी के शब्दों में एक रूपता =>

सरलता और बोधगमता के लिए समान श्रेणी के शब्दों में एकरूपता होनी चाहिए। जैसे - ताप के साथ तापमापी का प्रयोग ताप और थर्मामीटर से काफी अच्छा है।

(viii) शब्दों की स्वतंत्रता व पृथकता =)

प्रत्येक शब्द को अपने आप मे अलग तथा स्वतंत्र होना चाहिए ताकि प्रयोगकर्ता पढ़कर या सुनकर किसी भ्रम मे न पड़ सके ।

(ix) सरलता तथा स्पष्टता =)

पारिभाषिक शब्द उच्चारण की दृष्टि से सरल तथा अर्थ की दृष्टि से स्पष्ट होने चाहिए ।

(x) संक्षिप्तता तथा सांकेतिकता

पारिभाषिक शब्द होने चाहिए संक्षिप्त तथा सांकेतिक ताकि भाषा के नए संकेत समझ मे आ सके ।

(पारिभाषिक शब्दावली)

Date : 50

भारत के अंदर अनेक विद्वानों का एक वर्ग है जो यह मानता है कि हमें अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली को ज्यों की त्यों स्वीकार लेना चाहिए। इस विषय में केंद्रीय शिक्षा सलाहकार समिति ने भी ऐसी ही सलाह दी थी। उनका माना था कि हिंदी और अंग्रेजी मिश्रित बोली जाती थी। इसके निम्न लिए लाभ होंगे -

(i) हमें शब्द निर्माण के लिए प्राचीन साहित्य से शब्द तलाशने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

(ii) हम अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली से जुड़े रहेंगे।

(iii) कार्यरत वैज्ञानिकों को नई पारिभाषिक शब्दावली से परिचित नहीं होना पड़ेगा।

(iv) अतिरिक्त पैसा और समय बचेगा।

(v) अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली का न मानने से देश के वैज्ञानिक विकास नहीं कर सकते।

अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली को स्वीकार करने वालों का मत =>

(i) अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली विश्व के सभी देशों ने मिलकर निर्मित नहीं की।

(2) यह यूरोप के केवल 2-3 देशों में सामान्य समान रूप से प्रचलित शब्दावली है।

Date: 31

यह सभी देशों में द्वारा स्वीकृत शब्दावली नहीं है।

3. यूरोपीय देशों की शब्दावली केवल ग्रीक और लैटिन भाषा से बनी हुई है।

4) अंग्रेजी के सभी शब्द हमारी पारिभाषिक शब्दावली के अंग नहीं बन सकते।

(5) विदेशी भाषा की व्याकरण से हम अपनी भाषा को स्वीकृत नहीं कर सकते।

(6) विदेशी भाषा में हमारी भाषा जैसे संस्कार नहीं हो सकते।

(7) अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली में नए-2 शब्द बनाने की अतिरिक्त क्षमता नहीं है।